주한인도대사관
Embassy of India, Seoul
Republic of Korea

India@75

주한인도문화원
Swami Vivekananda Cultural Centre
Embassy of India, Seoul

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी | International Symposium | 인터내셔널 심포지엄

Via Video Conference

विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण | Teaching Hindi as a Foreign Language | 외국어로서의 힌디어 교육

विवरणिका

DATE August 4, 2021 (Wednesday) TIME 12:30 hrs (IST) | 16:00 hrs (KST)

अगस्त ४, २०२१ (बुधवार) | १२:३० (IST) १६:०० (KST)

2021년 8월 4일 (수요일) 오후 4시 (한국 시간)

संयोजक

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र | Swami Vivekananda Cultural Centre

भारतीय दूतावास, सियोल | Embassy of India, Seoul

प्रस्तावना

भारतीय दूतावास, सियोल में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र 4 अगस्त, 2021 को 'हिंदी को एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाना' पर तीसरी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। जनवरी और अप्रैल 2021 में आयोजित हिंदी पर पिछले दो संगोष्ठियों को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिलने के बाद, यह तीसरे संगोष्ठी का आयोजन पिछले दो की अगली कड़ी के रूप में किया जा रहा है। विशेष व्याख्यान और पैनल चर्चा के माध्यम से, विशेषज्ञ विदेशों में हिंदी को एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने की बारीकियों को समझने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। संगोष्ठी एक विदेशी भाषा के रूप में हिंदी के शिक्षण में आने वाले मुद्दों, विदेशों में हिंदी सीखने के अवसरों और स्थानीय भाषा में एक मानकीकृत पाठ्यक्रम और अध्ययन सामग्री के अभाव के कारण हिंदी पढ़ाने में स्थानीय शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करेगी।

वर्षों से, सियोल में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र कोरिया के मैत्रीपूर्ण लोगों के बीच हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न शैक्षणिक संगोष्ठियों और प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ-साथ हिंदी और संस्कृत में कक्षाएं भी आयोजित करता रहा है। यह केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा प्रस्तावित विदेशी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रम का भी संचालन करता है। सांस्कृतिक केंद्र एक विदेशी भाषा के रूप में हिंदी के लिए एक मानक पाठ्यक्रम और प्रवीणता परीक्षा विकसित करने के लिए भारत में हिंदी सिखाने और सीखने के लिए प्रमुख संस्थान केंद्रीय हिंदी संस्थान की प्रतीक्षा कर रहा है। यह न केवल हिंदी भाषा में परीक्षण दक्षता के स्तर को बढ़ाएगा बल्कि दक्षता परीक्षा में शामिल होने के लिए छात्रों के लिए अध्ययन सामग्री और प्रश्न कोष विकसित करके भाषा को समृद्ध करेगा।

आशा है कि इस संगोष्ठी के माध्यम से विशेषज्ञ हिन्दी को विदेश में विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विमर्श करेंगे और उनकी जांच करेंगे।

कार्यक्रम अनुसूची

12:30 IST / 16:00 KST	परिचय: डॉ. सोनू त्रिवेदी, निदेशक, स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, सियोल
12:35 IST / 16:05 KST	स्वागत सम्बोधन: माननीया श्रीप्रिया रंगनाथन, कोरिया गणराज्य में भारत के राजदूत
12:40 IST / 16:10 KST	विशेष व्याख्यान: प्रो. बीना शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

पैनल चर्चा

12:50 IST / 16:20 KST	संचालन: डॉ. सृजन कुमार,भारतीय अध्ययन विभाग, बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज,बुसान
12:55 IST / 16:25 KST	प्रो. मारिया नेज्येशी, पूर्व प्रमुख, भारतीय अध्ययन विभाग,ई एल टी ई विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी
13:05 IST / 16:35 KST	प्रो. एन. सी. कार, भारतीय अध्ययन विभाग, हांगुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, सियोल
13:15 IST / 16:45 KST	डॉ. वेद प्रकाश सिंह, विदेशी भाषा और संस्कृति के ग्रेजुएट स्कूल ,ओसाका विश्वविद्यालय,जापान
13:25 IST / 16:55 KST	श्रीमती वर्षा दैठणकर, परियोजना अधिकारी, सिडनी सामुदायिक भाषा शिक्षा संस्थान, सिडनी विश्वविद्यालय
13:35 IST / 17:05 KST	डॉ. सोन येओन-वू,भारतीय अध्ययन विभाग, बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज,बुसान
13:45 IST / 17:15 KST	डॉ. सत्यांशु श्रीवास्तव, कोरियाई अध्ययन केंद्र,जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
13:55 IST / 17:25 KST	प्रतिभागियों के साथ बातचीत
14:15 IST / 17:45 KST	समापन टिप्पणी

माननीया श्रीप्रिया रंगनाथन, कोरिया गणराज्य में भारत के राजदत

राजदूत श्रीप्रिया रंगनाथन एक करियर राजनयिक हैं, जो दिल्ली विश्वविद्यालय से आधुनिक भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता के साथ इतिहास में मास्टर्स डिग्री प्राप्त करने के तुरंत बाद 1994 में भारतीय विदेश सेवा में शामिल हुईं। अपने करियर के दौरान, राजदूत रंगनाथन ने नई दिल्ली और विदेशों में विभिन्न पदों पर कार्य किया है। उन्होंने म्यांमार में भारतीय दूतावास, यांगून में उप राजदूत के रूप में कार्य किया। उनकी अन्य विदेशी पोस्टिंग अंकारा और हांगकांग में थीं। मुख्यालय में अपने कई वर्षों के अनुभव के दौरान, उन्होंने विदेश मंत्रालय के साथ-साथ वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में विभिन्न पदों पर कार्य किया है। वह महिला नेतृत्व और सशक्तिकरण से संबंधित मुद्दों में गहरी रुचि रखती हैं और इन मुद्दों से संबंधित गतिविधियों के लिए समय निकालने की कोशिश करती हैं।

प्रो. बीना शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रो. बीना शर्मा की ख्याति भाषा शिक्षण की विशेषज्ञ के साथ एक प्रख्यात शिक्षाविद के रूप में है। आप विशेष रूप से द्वितीय एवं विदेशी भाषा के रूप हिंदी शिक्षण से लंबे समय से सम्बद्ध हैं। हिंदीतर भाषी विदेशी शिक्षार्थियों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराने में उनकी गहरी रुचि है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है जो बहुप्रशंसित हैं। आप संस्थान द्वारा प्रकाशित 'शैक्षिक उन्मेष' और 'प्रवासी जगत' पत्रिकाओं की संपादक रही हैं। वर्तमान में आप केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

डॉ. सोनू त्रिवेदी, निदेशक, स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, सियोल

डॉ. सोनू त्रिवेदी निदेशक, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, सियोल हैं। वह 2006 में जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में शामिल हुईं। सियोल में राजनयिक कार्य में जाने से पहले, वह नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली में फेलो थीं। वह इंस्टीट्यूट ऑफ एशिया पैसिफिक स्टडीज, CASS, बीजिंग (2011) में विजिटिंग फेलो, ICWA (2014) में म्यांमार कोर ग्रुप की सदस्य और IIM, इंदौर (2015-16) में विजिटिंग फैकल्टी भी थीं। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में दक्षिण पूर्व एशिया अनुसंधान समूह की संयोजक और वियतनाम अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली की संस्थापक निदेशक भी थीं।

डॉ. सृजन कुमार, भारत विभाग, बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, बुसान

डॉ. सृजन बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज के भारत विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। 2008 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से कोरियाई भाषा में बीए करने के बाद 2008 में ही ये कोरियन गवर्नमेंट स्कॉलर के रूप में दक्षिण कोरिया आए और सिओल स्थित क्यंगही यूनिवर्सिटी से विदेशियों के लिए कोरियाई भाषा शिक्षण में एमए और पीएचडी की। हिंदी और कोरियाई भाषा का तुलनात्मक अध्ययन इनके शोध का मुख्य विषय रहा है और इन्होंने इस क्षेत्र में कई शोध पत्र भी प्रकाशित किया है। 2014 से इन्होंने बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज में हिंदी और भारतीय संस्कृति पढ़ाना शुरू किया और विगत कई वर्षों से कोरियाई छात्रों के लिए हिंदी शिक्षण हेतु मानक पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तक और अन्य पाठ्य-सामग्रियों के निर्माण का कार्य सक्रिय रूप से कर रहे हैं। बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज के अलावा वर्तमान में ये सिओल स्थित स्वामी विवेकानंद भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में भी हिंदी पढ़ा रहे हैं।

प्रो. मारिया नेज्येशी, पूर्व प्रमुख, भारतीय अध्ययन विभाग, ई एल टी ई विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी

प्रोफ़ेसर मारिया नेज्येशी हंगरी के ओत्वोश लोरांद विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, में 1981 से हिंदी भाषा, साहित्य और भारतीय संस्कृति पढ़ा रही हैं। इन्होंने हंगेरियन माध्यम से हिंदी शिक्षण के लिए उपयोगी कई पाठ-सामग्रियों का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त इन्होंने व्यापक स्तर पर हंगेरियन साहित्य का हिंदी में और हिंदी साहित्य का हंगेरियन में अनुवाद भी किया है। प्रोफ़ेसर मारिया नेज्येशी ने हंगेरियन प्रतिनिधि के रूप में चार अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों में भाग लिया है और 2002 और 2007 में बुडापेस्ट में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मलेन का आयोजन भी करवाया था। हिंदी भाषा के क्षेत्र में इनके विशिष्ट योगदान के कारण इन्हें अनेक महत्वपूर्ण सम्मान भी मिले हैं। 2005 में इन्हें भारत की राष्ट्रपति के द्वारा ग्रियर्सन सम्मान प्रदान किया गया था। प्रोफ़ेसर मारिया न्येजेशी विगत 28 वर्षों से हंगरी स्थित भारतीय दूतावास के द्वारा आयोजित हिंदी शिक्षण कार्यक्रम में भी हिंदी पढ़ाती आ रही हैं। इसके साथ ही ये भारतीय समाज और संस्कृति पर केंद्रित एक व्याख्यानमाला का आयोजन भी करती हैं।

प्रो. एन. सी. कार, भारतीय अध्ययन विभाग, हांगुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, सिओल

प्रोफेसर एन. सी. कार हांगुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज, योंगिन, दक्षिण कोरिया, के भारतीय अध्ययन विभाग में प्रोफसर हैं और 2017 से ये दक्षिण कोरिया में हिंदी के अलावा संस्कृत, उर्दू और भारतीय दर्शनशास्त्र पढ़ा रहे हैं। पुणे विश्वविद्यालय से संस्कृत में एमए और पीएचडी करके के बाद प्रोफेसर कार 2005 से 2017 तक राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली में संयोजक के तौर पर काम कर चुके हैं। प्रोफेसर कार संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ हैं और संस्कृत व्याकरण, भाषा विज्ञान, प्राचीन भारतीय पांडुलिपि और शिलालेख के अध्ययन में इनकी गहन रूचि रही है। आपने इन विषयों से संबंधित कई शोध पत्र प्रकाशित किया है तथा भारत के कई विश्वविद्यालयों में अनेकों व्याख्यान भी दिया है। वर्तमान में प्रोफेसर कार स्वामी विवेकानंद भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, सिओल में संस्कृत भाषा भी पढ़ा रहे हैं।

डॉ. वेद प्रकाश सिंह, ग्रेजुएट स्कूल ऑफ़ फॉरेन लैंग्वेज एंड कल्चर, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

डॉ वेद प्रकाश सिंह मूलतः मध्य प्रदेश के भिंड जिले से हैं पर इनकी प्रारंभिक से लेकर पीएचडी तक की शिक्षा दिल्ली में हुई। 2012 से मार्च 2017 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में हिंदी शिक्षण का कार्य करने के बाद अप्रैल 2017 से ये जापान के ओसाका विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ा रहे हैं। हिंदी कहानी इनके शोध का मुख्य विषय रहा है पर गांधी जी, भारत-जापान संबंध, संस्कृति, पर्यावरण और आधुनिक साहित्य आदि विषयों से भी इनका विशेष लगाव है और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

श्रीमती वर्षा दैथंकर, परियोजना अधिकारी, सिडनी सामुदायिक भाषा शिक्षा संस्थान, सिडनी विश्वविद्यालय

श्रीमती वर्षा दैथंकर वर्तमान में सिडनी सामुदायिक भाषा शिक्षण संस्थान की परियोजना अधिकारी हैं। श्रीमती वर्षा सिडनी में हिंदी भाषा शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए अपने समर्पित प्रयासों के लिए जानी जाती हैं। वर्तमान में ये सिडनी विश्वविद्यालय की पहल पर सिडनी इंस्टिट्यूट फॉर कम्युनिटी लैंग्वेज एजुकेशन (SICLE) के लिए हिंदी, मराठी और गुजराती भाषा के पाठ्यक्रम संवर्धन के लिए परियाजना अधिकारी के रूप में काम कर रही हैं। श्रीमती दैथंकर को ऑस्ट्रेलिया के अकादमिक क्षितिज पर भारतीय भाषाओं के विकास के लिए कार्यरत अग्रणी संस्थानों में से एक, इंडो-ऑस्ट्रेलिया बाल भारती हिंदी विद्यालय में एक दशक से अधिक समय तक हिंदी पढ़ाने का अनुभव है। श्रीमती दैथंकर ने मराठी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण के क्षेत्र में भी अपनी विशेषज्ञता का विस्तार किया है। अपनी शोध उन्मुख दृष्टिकोण के साथ वर्तमान में ये भारतीय भाषाओं के लिए संसाधनों की पहचान और विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।

डॉ. सोन यन-उ, भारत विभाग, बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, बुसान

डॉ सोन यन-उ दक्षिण कोरिया के बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज के भारत विभाग में प्रोफेसर हैं। 2003 में बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज से हिंदी में बीए करने के बाद इन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एमए, एमफिल और पीएचडी की हैं। भारतीय और कोरियाई साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन इनका शोध विषय रहा है और इनके पीएचडी का शोध भी कोरियाई और भारतीय उपन्यासों में विभाजन के प्रमुख थीम का तुलनात्मक अध्ययन पर है। बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज में 2018 से हिंदी पढ़ा रही हैं और विगत कई वर्षों से हिंदी शिक्षण से संबंधित पाठ्य-पुस्तक और अन्य सामग्रियों के निर्माण, मानक हिंदी पाठ्यक्रम का निर्माण आदि कार्य सक्रिय रूप से कर रही हैं।

श्री सत्यांशु श्रीवास्तव, कोरियाई अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रोफेसर सत्यांशु श्रीवास्तव वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कोरियाई अध्ययन केन्द्र में सहायक प्रोफेसर हैं, साथ ही विश्वविद्यालय में नव स्थापित स्पेशल सेंटर फॉर ई-लर्निंग में concurrent फैकल्टी भी हैं। प्रोफेसर श्रीवास्तव 2006 में कोरियन गवर्नमेंट स्कॉलर के रूप में कोरिया गए और सिओल नेशनल यूनिवर्सिटी से आधुनिक कोरियाई साहित्य की पढ़ाई की। सिओल नेशनल यूनिवर्सिटी से एमए और पीएचडी पाठयक्रम पूर्ण कर 2012 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए। प्रोफेसर श्रीवास्तव 2016 में कोरिया फाउंडेशन के रिसर्च फेलो भी रह चुके हैं। आधुनिक कोरियाई साहित्य के साथ साथ कोरियाई भाषा अनुवाद, भाषा शिक्षण, ई-लर्निंग में में इनकी विशेष रूचि है। इन विषयों पर आपके अनेक शोध पत्र प्रकाशित हैं। आप 2010 में सिओल स्थित स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना के बाद वहाँ के पहले हिंदी शिक्षक बने। और अभी भी ये जेएनयू में हर वर्ष बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज और हंगुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज के छात्रों को हिंदी पढ़ाते हैं।

주한인도대사관
Embassy of India, Seoul
Republic of Korea

주한인도문화원
Swami Vivekananda Cultural Centre
Embassy of India, Seoul

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र | Swami Vivekananda Cultural Centre
भारतीय दूतावास, सियोल | Embassy of India, Seoul

FOLLOW US @IndiainROK @ICCSeoul